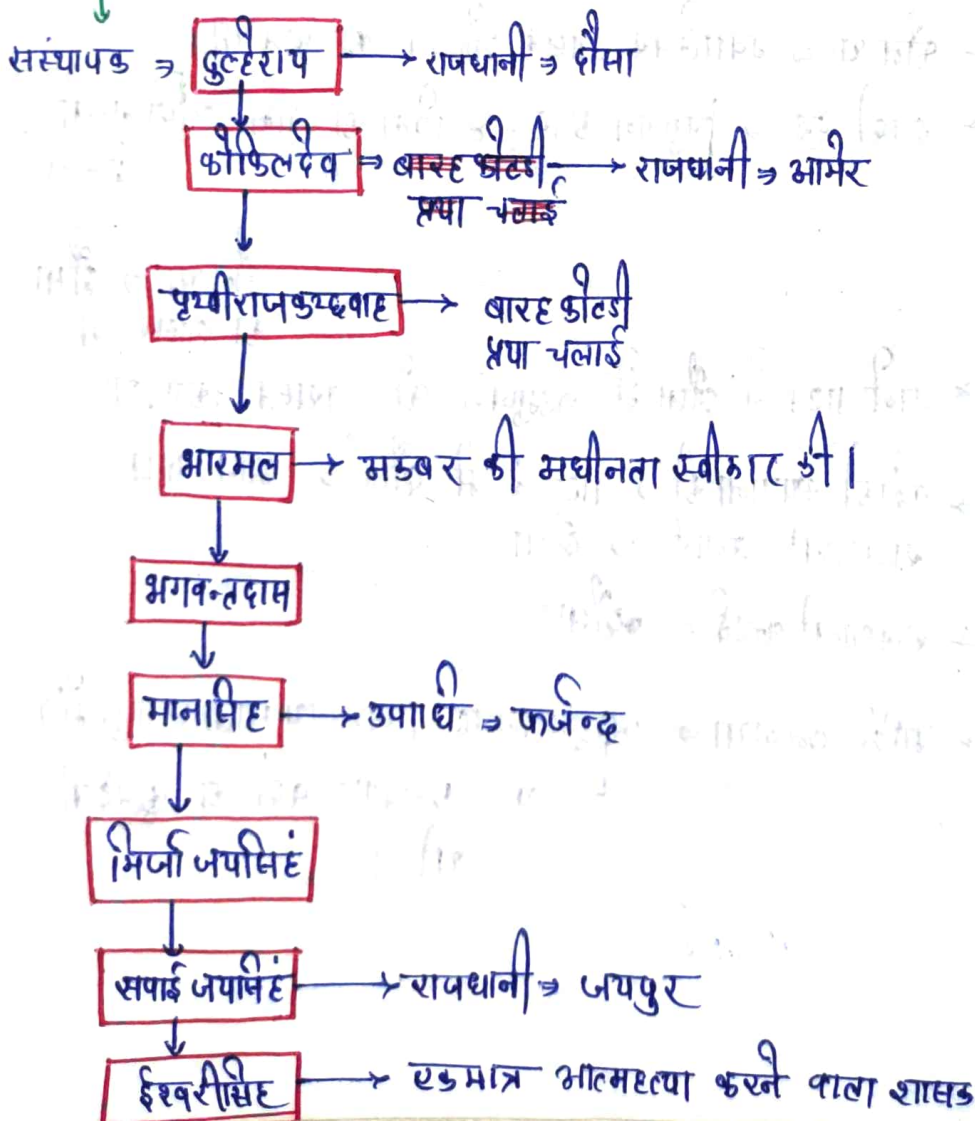


आमेर का इतिहास (कच्छवाहवंश)

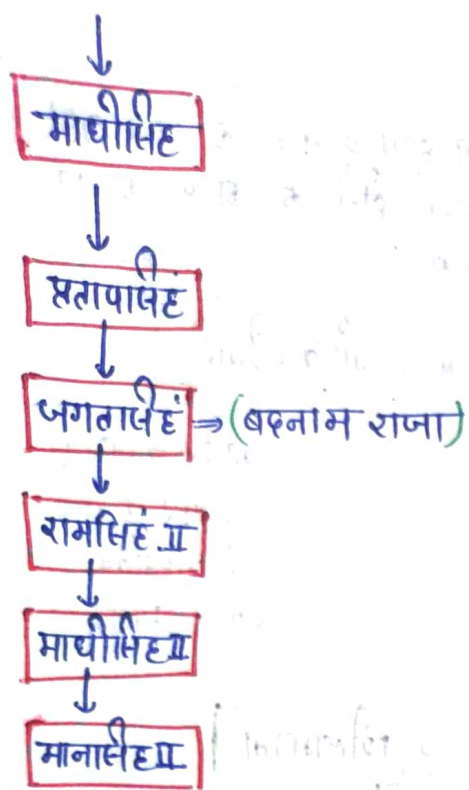
આમૈર રિયાપત

- प्राचीन नाम = दुहाड प्रदेश
- प्रारम्भ मे = दुहं नदी के किनारे
- भाषा = दुहाड प्रदेश
- इसडे भन्नगति — [→ जयपुर
→ दोसा

⇒ शासकीय का क्रम



- नामकरण हुआ = राम के पुत्र कुश की संतान होने के कारण उम्भवाह भूलाए।
- कुलदेवता = जीर्णदेवजी
 - माँदेर = जयपुर
 - जयपुर के राजा इन्हें वास्तविक राजा मानते थे।
- कुलदेवी = शीलाभाता
 - माँदेर = मामीर (जयपुर)
- दीप्य वाक्य = यति धर्मस्तनी जयते



कच्छवाह वंश

→ संस्थापक = दुर्लहराय, तेजकरण, धौलाराय

- डौन था ⇒ ग्वालेपर शासक सींदेव का पुत्र था।
- शादी हुई ⇒ सुजान डवर → पिता का नाम ⇒ शालपसी - जीधान
 ↓
 डौन था ⇒ दौसा का शासक था
- अपने 1137 में दौसा में बड़गुजरी की परास्त किया था
- पंजाबी स्थापना की ⇒ 1137 ई. में दौसा के भास-पास राजधानी बनार्व ⇒ दौसा
- राजधानी बनार्व ⇒ दौसा
- मंदिर बनवाया ⇒ जमुवारामगढ़ (जमवाप भाता जयपुर में)
 → यह कच्छवाह वंश की कुलदेवी थी।

कौटिल देव

- इसने दराया था ⇒ 1207 में आमेर के मीनामी की
- नई राजधानी बनाई ⇒ आमेर (जयपुर) की 1207 में
- पुत्र था ⇒ पंचम देव ⇒ इसने तराइन के II युद्ध 1191 में भाग लिया था।

मोहम्मद गोरी

→ जीत

पृथ्वीराज चौहान

द्वार

साथ दिया ⇒ पंचम देव की लड़ता हुआ मारा गया था

पृथ्वीराज छद्मवाह

- रानी दारा पुण्डर (मजमेर) में 1000 दीपक प्रतिदिन जलाती थी
- गुरु बनाया ⇒ कृष्णदास पण्डरी → स्थापना की थी ⇒ गलता जी (जयपुर) रामानन्दी सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ थी
→ इसने राम-भीमा की एक साथ पूजा जाता है।
- भाग लिया ⇒ 1517 खानवा का युद्ध

बाबर

→ जीत

सांगा

→ साथ दिया ⇒ पृथ्वीराज छद्मवाह इसमें लड़ते हुए मारा गया।

- कुल पुत्र थे ⇒ 12 इसने पुरा राज्य विभाजित किया
- प्रथा चलाई ⇒ बारहफीट की प्रथा चलाई

⇒ पृथ्वीराज छद्मवाह के पुत्र ⇒ रानी ⇒ बालाबाई ⇒ इसने कन्या पट पूर्णमल की राजा बनाया

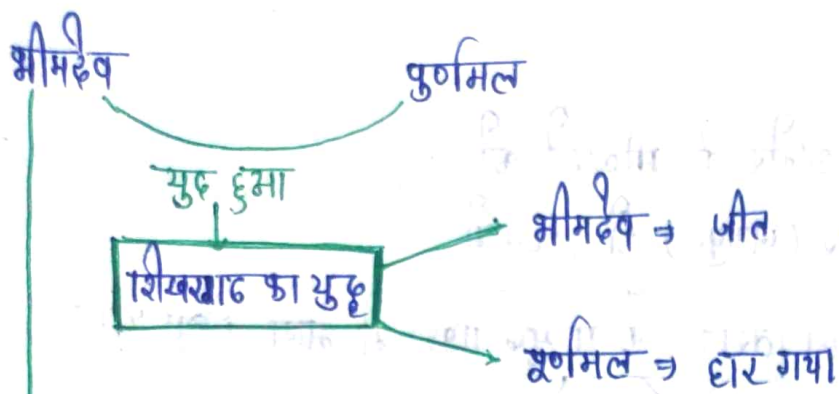
भीम देव

पूर्णमल

सांगा

भारमल

युद्ध हुआ



→ अकस्मात मृत्यु हो गई।

2 पुत्र

रतनासिंह

भासडरण

→ इसी भासडरण ने भारमल के डहने पर जहर देकर मार दिया था।

भारमल (1547-72)

→ राजा बनने की समस्या = गृहक्षेत्र में भतीजी भासडरण का विरोध
= मीणा - गुर्जरी की लूट-पाट

→ संतान = भगवन्तदास → पुत्र → मानीसिंह कुम्हारवाह
= हरदाबाई

→ समकालीन बादशाह = अकबर (1556-1605)

→ मुलाकात = अकबर और भारमल के मध्य

↓
→ समय = 1562 में सागानेर (जयपुर) में

→ मुलाकात करवाई = चंगताई खान की

→ शादी करवाई = अकबर + हरदाबाई की

→ सांभर (जयपुर) में शादी हुई। 1563

→ पुत्र हुआ = सलीम / जयगीर

= राज. का पहला शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।

⇒ राजस्थान का पहला शासक जिसने मुगली से विवाह सम्बंध बनाए।

⇒ पहला मुगल - राजपूत विवाह था।

note ⇒ आलेम मुगल - राजपूत विवाह ⇒ इन्नाकुपरी + करियाशीपर की था

भगवन्तदास (1573-89)

→ ① संतान → मानसिंह

② मानसिंह → शाही की → जहागीर (सलीम) ⇒ 1585 में

→ दूसरा मुगल राजपूत विवाह

→ पुत्र ⇒ खुसरो

→ इसकी हत्या | माँ मानसिंह ने कर दी।
उपनाम ⇒ छत्रहन्ता माँ

→ इसका साथ दिया

→ सिक्की के डके गुरु मर्जुनदेव

→ इसको जहागीर दी जासी थी

→ यह मुगल दरबार में उपस्थित रहा

Im → मऊबर ने इसी प्रताप की सम्मानने तीसरी शिष्टमण्डल में भेजा था

note ⇒ मऊबर द्वारा प्रताप की सम्मानने के लिए क्रमशः 4 शिष्टमण्डल भेजे ① जलालखाँ ② मानसिंह ③ भगवन्तदास ④ टीडरमख
Trick ⇒ J M B D

मानसिंह (1589-1614)

→ जन्म ⇒ 1550 में आमेर में

→ 12 वर्ष की अवस्था में दरबार के साथ मऊबर की सेवामें भेजा

→ उपाधि ⇒ फरिद कहा था ⇒ मऊबर ने

→ गौद लिया पुत्र

→ रानी का पुत्र जगतसिंह ⇒ बंगाल अभियान से लौटते हुए मृत्यु हो गई
→ माँ ⇒ अन्यायी ने इसकी पालन में बनाया

जगतश्रीमानी मंदिर (आमेर)

⇒ मूर्तिरूपी = कृष्णजी = यह वही मूर्ति है। जिसकी पूजा मीरा बार्ह करती है।

⇒ उपनाम = जयपुर। आमेर का मयुराक्षी

निर्माण करवाया = आमेर का किला (जयपुर)

⇒ इसका सबसे पुराना महल = कुम्भी महल

⇒ निर्माण = राजदेव
⇒ महल = यह आमेर के राजाओं का राज्याभिषेक होता था।

दरबारी विद्वान = पुण्डरीक पिप्लू

⇒ किताब लिखी

⇒ रागमाला ⁱⁿ
⇒ रागमंजरी ⁱⁿ
⇒ राग चन्द्रोदय

⇒ इसी अक्षर ने प्रताप की समझाने के लिए 2 शिष्टमण्डल में भेजा (जून 1573)
⇒ मकबर ने मानसिंह की सेना देकर मेवाड़ अभियान पर भेजा और मानसिंह ने

मकबर का किला (आमेर) में शरण ली और हल्दीघाटी युद्ध की योजना बनाई थी

18 Jun 1576 - हल्दीघाटी युद्ध

भदाराणा प्रताप
↳ धार

मानसिंह
↳ जीत

⇒ भुवनेश्वर ने मानसिंह की अभियानी पर भेजा

⇒ फाबुल अभियान ⇒ यहाँ मानसिंह ने 5 यवन कुबीली की द्वाया जिसके कारण भामेर की पतागफरंगी हो गई थी

⇒ बिहार अभियान ⇒ यहाँ बिहार शासक पूरणमल की परास्त किया।
यहाँ नगर बसाया ⇒ मानपुर कस्बा

⇒ बंगाल अभियान ⇒ यहाँ पूर्वी बंगाल शासक केदार की परास्त किया।
इसमें यहाँ नगर बसाया ⇒ भुवनेश्वर

⇒ मानसिंह जस्सील (बंगाल) से शीलमाता की मूर्ति लाया

note ⇒ भामेर में बनवाया ⇒ शीलमाता मंदिर (भामेर)
→ कुम्भवाह वंश की भारद्वाज देवी।

मिर्जा जयसिंह 1651-67

⇒ समकालीन बादशाह ⇒ शाहजहाँ (1628-58)

⇒ नया बादशाह औरंगजेब (1658-1707)

चार पुत्र

- दारा
- शुजा
- मुराद
- औरंगजेब

उत्तराधिकार युद्ध हुआ

1658 धरमनगर युद्ध M.P.

मिर्जा जयसिंह

साथ दिया

दारा
दारा

औरंगजेब
जीत

1659 देवरस / देवरस का युद्ध

मिर्जा जयसिंह

साथ

औरंगजेब
जीत

दारा ⇒ दार

⇒ भौरगजेब ने **शिवाजी** के खिलाफ अभियान पर भेजा ⇒ मिर्जा जयसिंह
 ↳ इन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

⇒ **1665 - पुनर्दर की संधि**

- मध्य दुमा = शिवाजी + मिर्जा जयसिंह
- शिवाजी ने 35 दुर्ग में से 23 दुर्ग मुहब्बी की दिए।
- भौरगजेब ने शिवाजी की छोटी से आगटा (O.P) में कैद किया
 ⇒ लेकिन शिवाजी भाग गया।
- भौरगजेब ने मिर्जा जयसिंह की दक्षिण अभियानी पर भेज दिया।
- मृत्यु ⇒ 1667 में बरहानपुर (M.P)

मिर्जा जयसिंह (1621-67) पुत्र → रामसिंह II (1661-82) पुत्र → **विशनीसिंह** (1682-17)
 ↓ 2 पुत्र
 जयसिंह II विजय सिंह

सवाई जयसिंह (1700-43)

- उपनाम = चाणक्य
- सवाई जयसिंह ने **भौरगजेब** की
- **राजशेखर** की पत्नी ⇒ भीममदशाह रगीला

→ दरबारी विद्वान → पुण्डरीक रत्नाकर → गुरु लिखा → **जयसिंह कल्पद्रुम**

→ पुण्डरीक सुधाकर → **साहित्यसार संग्रह**

→ जगन्नाथ → **सिद्धान्त समार + सिद्धान्त औद्युग्ग**

→ निर्माण = सिसोदिया रानी का बाग (जयपुर)

→ जलमहल / सिरी पैलेस (जयपुर)

→ यह राजा के 3 सबसे बड़े पुत्रों के लिए बनाया गया था। जो माधोसिंह II ने रखवाये।

→ भव्य है = मुबारक महल = निर्माण = माधोसिंह II ने

→ प्रासिद्ध है = मेहमानवाजी के लिए

note =

मुबारक महल (शुक्र) जो छत के बालों के लिए प्रसिद्ध है।

→ नाहरगढ़ दुर्ग - जयपुर = जयपुर का मुकुटमणि

→ जलमहल (जयपुर) = मानसागर झील पर बनाया गया था।

⇒ इसने अश्वमेध यज्ञ करवाया था यह भारत का आन्तरिक हिन्दु शासक
जिसने अश्वमेध यज्ञ करवाया

⇒ इस यज्ञ में राजा बीजा दीपसिंह कुमांगी ने भाण्डारीज (दीप्ता) में पकड़
कुम्भाजी लड़ते हुए युद्ध में मारा गया था।

⇒ इसने नगर बसाया = जयपुर / जयनगर

→ समय = 18 Nov 1727 को

→ नींव डाली = जगन्नाथ ने जीराबरासिंह महल पर

→ वास्तुकार था = विद्याधर भट्टाचार्य

→ बंग रखाया = 1868 में रामसिंह II ने

⇒ रीनले रीड ने पुस्तक = The Royal town of India में pink city / गुलाबी नगरी कहा।

⇒ इसके समकालीन बादशाह =

- औरंगजेब (1658-1707)
- बहादुरशाह I (1707-12)
- जहादुरशाह (1712-13)
- फरीखारीयार (1713-1717)
- रफी उद दौला (1719)
- रफी उद दराज (1719)
- मौहम्मदशाह रगीला (1719-48)

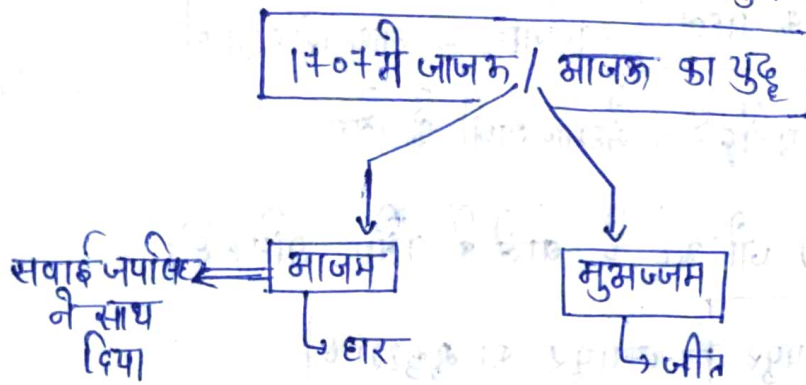
सर्वाधिक मुगल बादशाहों का कार्यकाल देखने वाला राजा का शासक था (बादशाह)

⇒ समकालीन बादशाह = औरंगजेब शत्रु →

भाजम

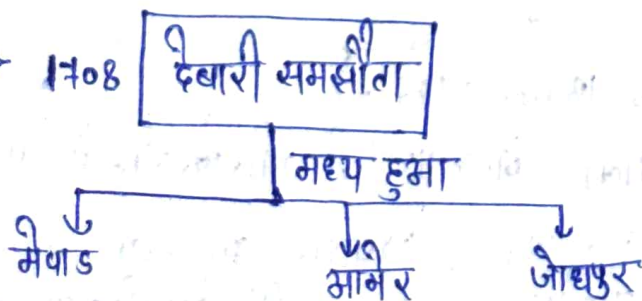
मुमज्जम

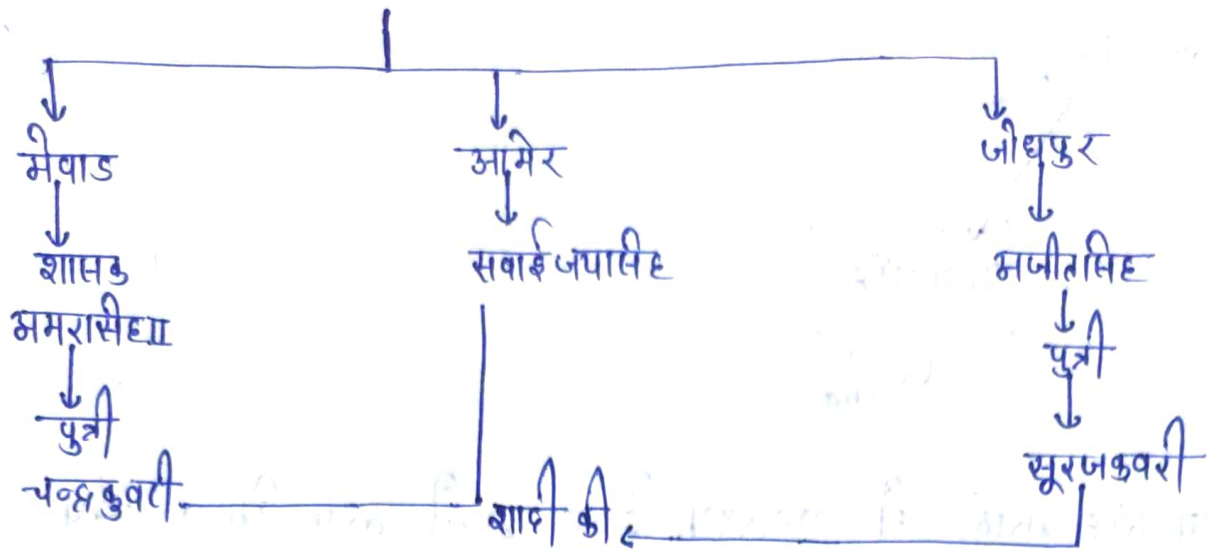
 उत्तराधिकार पुरे हुआ।



⇒ नया बादशाह बना = मुमज्जम / बहादुरशाह I

- इसने बदला लेने के लिए सवाई जयसिंह से भामेर की गद्दी हिनकर इसके छोटे भाई विजयसिंह / जीमाजी को सौंप दी।
- बहादुरशाह ने भामेर का नया नाम रखा = भीमिनाबाद / इस्लामाबाद
- सवाई जयसिंह मदद मागने भीवाड़ का आगया





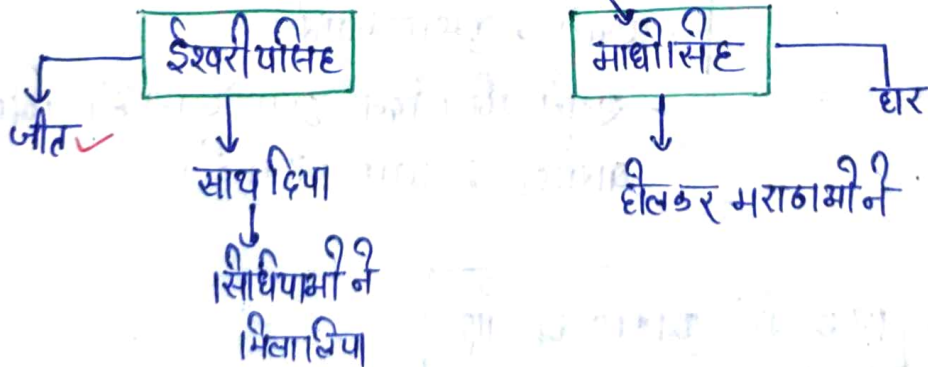
⇒ देवारी समझौते के तहत मेवाड के अमरासिंह की जे सवाईजपासिंह की मेवाड बापिल दिलवाए ।

सवाई जपासिंह

पुत्र → ईश्वरीपसिंह
माधोसिंह > इनमें उत्तराधिकारी भुदू हुआ ।

ईश्वरीसिंह (1443-50)

→ सेनापति = हरगीबेन्द नायनी
→ शासब बनने के बाद इसका विरोधी **माधोसिंह** था
→ भुदू हुआ = 1443 ईस्वी राजमहल का भुदू



Note ⇒ इस भुदू की जीत की खुशी में ईश्वरीप सिंह ने जयपुर में सरगासूबी / ईसरलाट (जयपुर) का निर्माण करवाया ।

1748 बगर का युद्ध

इश्वरीप
सिंह

घर

माधोसिंह

जीत

note ⇒ इश्वरीप सिंह मराठी की बडीशाली देकर अपनी तरफ भिटा लिया
⇒ इश्वरीप सिंह ने मराठी से तंग आकर अरगाखूनी ईमारत से कुहर कर आत्महत्या कर ली 1750 में

note ⇒ राजा का एकमात्र ऐसा राजा जिसने आत्महत्या की थी।

माधोसिंह (1750-1768)

- इसके काल में सबसे बड़ी समस्या मराठाओं की लूटपाट
- इसने जयपुर में मराठी का 5000 किलेबम करवा दिया।
- निर्माण करवाया = मीठी डूंगरी गणेश मंदिर (जयपुर)
 - ⇒ शीतल माता मंदिर (राउसू) जयपुर में बनाया
 - वाहन = गधा
 - पुजारी = कुम्हार जाति
 - इसकी जिस दिन पूजा जाता है। जिस दिन वासीडा मनाया जाता है।

पुद्गुभा = 1769 में काकीड का युद्ध

माधोसिंह I

जीत

मराठी

घर

- ⇒ मुगल बादशाह शाहजहाँ II ने रणघमौर दुर्ग (सवाई माधीसीह) की दे दिया लेकिन कीरा शासक शत्रुशाल विरोधी ही गया
- ⇒ दोनों के बीच युद्ध हुआ

1161 भावाण का युद्ध

शत्रुशाल

↓ जीत

माधीसीह

↓ हार

सवाई प्रतापसीह 1178-1303

- निर्माण ⇒ हवामहल (जयपुर) ⇒
- 5 हवामहल
 - 4 प्रकाशमहल
 - 3 विचित्र महल
 - 2 रत्न महल
 - 1 शारद महल
- निर्माण करवाया ⇒ 1199
- वास्तुकार ⇒ लालचंद कस्तू
- भाकृति ⇒ कृष्ण के मुकुट के समान

इसके दरबार में 32 विद्वान रहते थे

इनका सगठन कहलाता था ⇒ गंधर्वबाईसी / गुणीजनखाना

→ उद्देश्य ⇒ शानियों के तीज / ल्पौहार / सवारी देखने के लिए बनाया गया था

इनके संगीत गुरु ⇒ चांदखां

स्वयं विद्वान और स्वयं ने ग्रंथ लिखे ⇒ श्रीतिलक + शम्भुबतीसी

मराठा ने आक्रमण कर दिया ⇒ 1187 लुगां का युद्ध

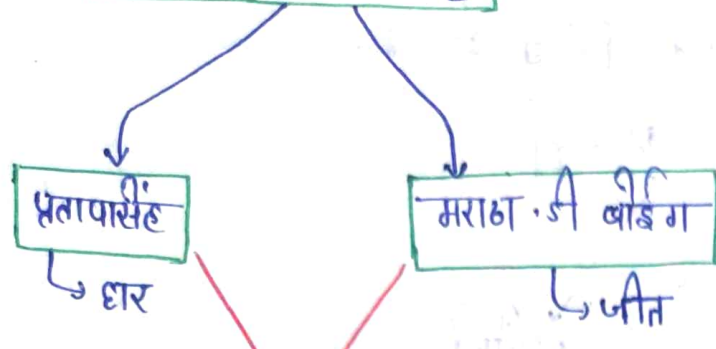
प्रतापसीह

↓ जीत

मराठा

↓ हार

1790 - पाटन का युद्ध

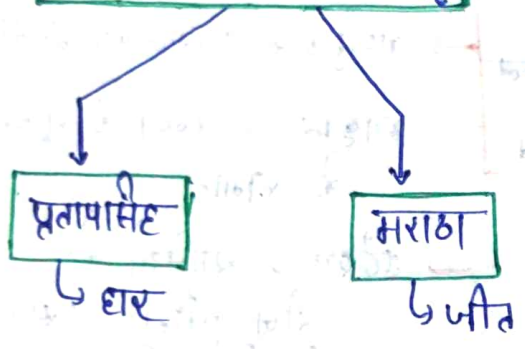


⇒ इन दोनों के मध्य संधि हुई थी

1791 में सांभर की प्रथम संधि

→ प्रतापसिंह ने इनकी दर्जना दिया और युद्ध पर रोक लगा दी।

⇒ 1800 - मालपुरा का युद्ध



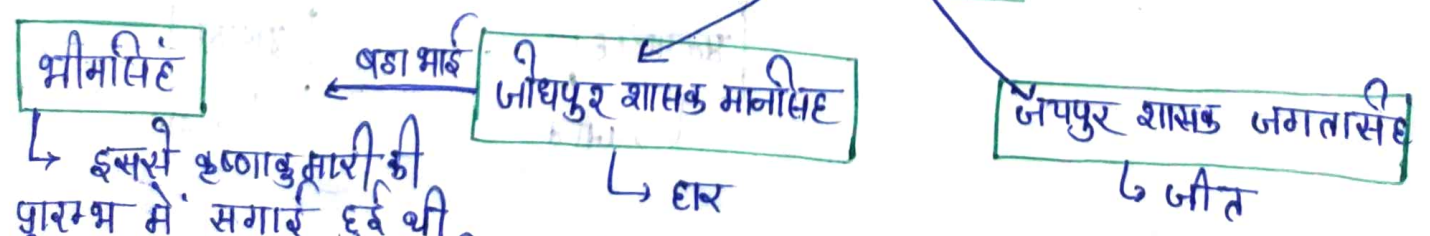
जगतसिंह (1803-18)

- ग्रामिका / दासी = ~~नैल~~ बसकपुर
- उपनाम = बढनाम शासक
- इसके काल में विवाह हुआ =

कृष्णाकुमारी विवाह

⇒ कृष्णाकुमारी उदयपुर शासक भीमसिंह की पुत्री थी।

1804 गिगोली का युद्ध



→ इससे कृष्णाकुमारी की प्रारम्भ में सगाई हुई थी जो अकस्मात मर गया (बिना शादी के)

note → अमीर खां पिठारी के क़त्ले पर भीमसेन ने छूनाकुमारी की जहर देकर मार दिया।

note → जगतसेन जयपुर का पहला राजा जिसने अग्रेजी से संधि की थी।

शमसेन II (1835-80)

- यह अल्पायु में शासक बना
- सरहंज बनाया = **मीजर लुडली** → इसने सर्वप्रथम जयपुर में समाधि प्रथा पर रोक लगाई थी।
- यह 1857 की क्रांति के समय जयपुर का शासक था। और अग्रेजी का वफादार था।
- इसने क्रांति में अग्रेजी की तन-मन-धन से सहायता की थी।
- उपाधि दी = **सितार ए हिन्द** = दी थी → अग्रेजी ने और अग्रेजी ने कीचपूतली की जागीर दी थी।
- 1868 में **जयपुर पर गैरुआ रंग** लगाया था।
 - स्टैनले रीड ने पुस्तक *The royal town of india* में pinkcity / गुलाबी नगरी कहा।
- निमाण करवाया = **राजस्थान स्कूल of art / महरसा ए दुनरी** 1857 में
 - उद्देश्य = हुनवमंद लीगी की प्रोत्साहित करना
 - **अल्बर्ट हॉल (जयपुर)**
 - यह प्रिंस अल्बर्ट की याद में 1876 में बनवाया
 - वास्तुकार = स्टीवन जेम्स
 - शमनिवास बाग + शमबाग बनवाया था।

माधोसिंह II (1880-1922)

- उपनाम = खूबर शेर
- इसके काल में 1898 में आपनिपा अकाल पड़ा था।
- इसने नाहरगढ़ दुर्ग में शानिपी के लिए एक जैसी 9 मंजिल बनवाए
- इसने चन्द्रमहल में छातीपा के दो सबसे बड़े चौकीदार रखवाए
- इसने चन्द्रमहल में **मुबारक महल** बनवाया था।
 - प्रसिद्ध था = भैरमानवाजी के लिए
- इसने 1909 में निर्मित **बनारसहिन्दू विश्वविद्यालय** के निर्माण में 5 लाख रुपये दान किए थे।

आन्तरिक शासक =

मानसिंह II (1922-1956)

- एकीकरण / स्वतंत्रता के समय जयपुर का शासक था।
- इसे **राजस्थान का आन्तरिक राजप्रमुख** बनाया था।
 - इसके स्थान पर नया पद चलाया। = राज्यपाल
 - राज. का प्रथम राज्यपाल बनाया = गुरुमुखनिहालसिंह की